May 2017 subject reports

Hindi B

Overall grade boundaries

Higher level

Grade:	1	2	3	4	5	6	7
Mark range:	0 - 17	18 - 34	35 - 50	51 - 62	63 - 72	73 - 84	85 - 100

Standard level

Grade:	1	2	3	4	5	6	7
Mark range:	0 - 13	14 - 27	28 - 41	42 - 56	57 - 70	71 - 85	86 - 100

Higher level internal assessment

Component grade boundaries

Grade:	1	2	3	4	5	6	7
Mark range:	0 - 3	4 - 6	7 - 12	13 - 17	18 - 21	22 - 26	27 - 30

प्रस्तुत कार्य का विस्तार और उपयुक्तता

मौखिक प्रस्तुति के लिए जो चित्र विद्यालयों द्वारा प्रस्तुत किए गए वे अधिकतर यथोचित थे| अधिकतर चित्र यदि आदर्श थे तो कुछ चित्र परीक्षार्थियों को गुमराह करते नज़र आए | कुछ चित्रों में एक ही साथ ५ – ६ चित्र गुँथे हुए थे| जहाँ अधिकतर शिक्षकों ने चित्र के स्त्रोत के प्रति साभार प्रकट किया ,वहीं कुछ

मामले इसके विपरीत भी थे| अधिकतर चित्रों के विषय स्वास्थ्य, भारतीय संस्कृति, मादक पदार्थों का सेवन तथा मनोरंजन से संबंधित रहे| कुछ चित्रों का चयन विकल्प के विषयों में से नहीं रहा, जोकि उचित नहीं है| कुछ चित्रों के शीर्षक उपयुक्त थे, कुछ उपयुक्त होने के बहुत पास थे तो कुछ अपने चित्र से संघर्ष करते दिखाई दे रहे थे| कुछ शीर्षकों ने निःसंकोच अंग्रेज़ी भाषा को अपने घर में स्थान दिया तो कुछ में वर्तनी की अशुद्धियाँ भी पाई गईं | इन सभी विविधताओं का अंश निश्चित रूप से परीक्षार्थियों के प्रस्तुतीकरण में साथ चलता दिखाई दिया | अधिकांश मामलों में प्रस्तुतीकरण ने इस बार अपनी समय सीमा बखूबी निभाई और शिक्षकों ने भी परीक्षार्थियों को बोलने का खूब मौका दिया| परंतु कुछ प्रस्तुतियों में अभी भी समय सीमा संबंधी निर्देशों का पालन नहीं किया गया| अधिकतर कार्य आई बी दिशा निर्देशों के अनुरूप ही थे परन्तु जहाँ एक ओर कार्य की बारीकी और विषय की जबरदस्त पकड़ वाले प्रस्तुतीकरण सामने आए, तो वहीँ दूसरी ओर कहीं किसी प्रस्तुतीकरण में निर्देशों से थोड़ा भटकाव भी दिखाई दिया| प्रस्तुतीकरण के दोनों चरणों में परीक्षार्थियों की अच्छी तैयारी का बोलबाला रहा और शिक्षकों ने भी उन्हें यथोचित सहयोग दिया| कुछ परीक्षार्थी अपना नाम, परीक्षार्थी क्रमांक तथा विद्यालय का नाम बोलते पाए गए, जोकि गोपनीयता के तहत अब नहीं बताना है| अधिकांश मामलों में प्रस्तुतीकरण के दूसरे चरण में शिक्षकों ने अच्छे प्रश्न पूछे | कुछ शिक्षकों ने अभी भी प्रस्तुतीकरण से हटकर परीक्षार्थियों के शौक आदि से संबंधित प्रश्न पूछे | बहुत ही कम परंतु कुछ मामले ऐसे भी नज़र आए ,जिनमें शिक्षक परीक्षार्थियों का सामान्य ज्ञान आँकलित करते नज़र आए | कुछ अध्यापकों द्वारा जो प्रश्न पूछे गए वे परीक्षार्थियों को भ्रम में डालने योग्य थे या यूँ कहें कि विषय के अनुकूल नहीं थे। लेकिन हर्ष की बात यह रही कि इस प्रकार की त्रुटियों का प्रतिशत बहुत ही कम रहा |

प्रत्येक मूल्यांकन कसौटी के अनुरूप परीक्षार्थी का प्रदर्शन

मानदंड अ : मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता

प्रथम भाग में कुल मिलाकर परीक्षार्थियों का प्रदर्शन अच्छा रह | अधिकतर प्रस्तुतियों में भाषागत निपुणता देखने को मिली कुछ तो इतनी अच्छी थीं कि पूर्वअभ्यास करने का संदेह पैदा कर रही थीं | अधिकतर प्रस्तुतियों में भाषा में धाराप्रवाहिता थी और कई परीक्षार्थियों ने मुहावरेदार भाषा का प्रयोग भी किया। ज्यादातर मामलों में भाषागत त्रुटियाँ कम दिखीं । कुछ एक प्रस्तुतियों में काफी अच्छी शब्दावली भी सुनने को मिली | जहाँ अधिकतर परीक्षार्थियों ने समय का पालन बखूबी किया, वहीँ कुछ प्रस्तुतियों में समय सीमा की अवहेलना की गई और प्रथम भाग चार मिनट से अधिक रहा|

मानदंड ब : अर्थग्रहण एवं परिसंवाद की क्षमता

दूसरे भाग में पाया गया कि परीक्षार्थी भले ही बड़े – बड़े शब्दों का प्रयोग न कर सके हों परन्तु उनकी सहजता प्रथम भाग से कहीं अधिक थी | परीक्षार्थियों ने अपने विचार एवं प्रस्तुति में सामंजस्य बनाए रखा तथा उनमें पूर्ण स्पष्टता दिखी। वार्तालाप में सहज भाव से समुचित सहभागिता का प्रदर्शन रहा। कभी–कभी ऐसा भी पाया गया कि कुछ परीक्षार्थियों द्वारा प्रश्न पूरी तरह नहीं समझे गये और कुछ परीक्षार्थियों द्वारा प्रश्न के एक भाग पर ध्यान नहीं दिया गया। कुछ शिक्षक ,परीक्षार्थियों द्वारा दिए गए उत्तरों को अनावश्यक रूप से विस्तार से समझाते हुए नज़र आए ,जिसके कारण परीक्षार्थी के पास अपनी बात को कहने के लिए कम समय शेष रह जाता है | कुछ स्थानों पर शिक्षकों के दीर्घ एवं सामान्य ज्ञान से जुड़े प्रश्नों ने थोड़ा निराश अवश्य किया| बहुत कम परन्तु कुछ उदाहरण ऐसे भी पाए गए जहाँ समय सीमा की अवहेलना की गई |

International Baccalaureate
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

भावी परीक्षार्थियों के शिक्षण हेतु परामर्श और मार्गदर्शन

शिक्षकों से निवेदन है कि Language - B Guide को ध्यान से पढ़कर मौखिक प्रस्तुति संबंधी सभी निर्देशों का पालन करें। शिक्षक ,परीक्षार्थियों को आई बी द्वारा निर्धारित मानदंडों का पूर्ण ज्ञान अवश्य करवाएँ ,इससे परीक्षार्थियों का प्रदर्शन स्तर बेहतर होगा| चित्र ऐसा हो जिससे परीक्षार्थी पढ़ी गई भाषा की संस्कृति पर अपने विचार प्रकट कर सके और उस पर बाद में भी विस्तार से बातचीत की जा सके। चित्र का शीर्षक सटीक होना चाहिए तथा भाषा की शुद्धता होनी चाहिए। अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग मान्य नहीं है। शिक्षक समय–समय पर विकल्प विषयों के चित्र दिखा कर कक्षा में वार्तालाप अवश्य करें इससे परीक्षार्थियों में आत्मविश्वास का विकास होगा| चर्चा के दौरन सांस्कृतिक विभिन्नताओं की समझ और गहराई पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इस चरण में शिक्षक स्वयं को प्रभावशाली होने से बचाएँ| शिक्षक को वार्तालाप के दौरान अनावश्यक बातें नहीं करनी चाहिए और ना ही अपने विचार या अपना वाक्चातुर्य प्रदर्शित करना चाहिए। शिक्षक को परीक्षार्थी को अपनी पूरी बात कहने का अवसर देना चाहिए। वार्तालाप में विचारों का आदान प्रदान स्वाभाविक रूप से होना चाहिए। रिकॉर्डिंग गुणवत्ता की दृष्टि से अच्छे स्तर की होनी चाहिए तथा शांत वातावरण में की जानी चाहिए। परीक्षार्थी का नाम, परीक्षार्थी क्रमांक तथा विद्यालय का नाम संबंधी गोपनीयता अपेक्षित है|

Standard level internal assessment

Component grade boundaries

Grade:	1	2	3	4	5	6	7
Mark range:	0 - 3	4 - 6	7 - 12	13 - 17	18 - 21	22 - 26	27 - 30

प्रस्तुत कार्य का विस्तार और उपयुक्तता

मई २०१७ के इस परीक्षा सत्र में मानक स्तर की मौखिक परीक्षा का कार्य संतुष्टिपूर्ण रहा। स्वास्थ्य और मनोरंजन सम्बन्धित विषय परीक्षार्थियों में लोकप्रिय रहे। व्यायाम, मादक पदार्थों का सेवन, भारत में स्वच्छता की कमी, धूम्रपान, डिब्बाबंद खाना, विदेशी चटपटे खानपान का भारत में प्रचलन, संतुलित आहार आदि विषयों को परीक्षार्थियों ने रोचकता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया। फैशन, त्यौहार, विज्ञान और तकनीक, ई-कचरा आदि विषय भी लोकप्रिय रहे। अधिकतम परीक्षार्थियों ने भारतीय संस्कृति के नकारात्मक पहलुओं को ही अपनी मौखिक प्रस्तुतीकरण का आधार बनाया।

लगभग सत्तर विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा चित्र का चुनाव एवं संयोजन ठीक था, बहरहाल कुछ शिक्षकों द्वारा अन्य विषयों के भी चित्र दिए गए थे जिनका वैकल्पिक विषयों से कोई सम्बन्ध नहीं था। तकरीबन पाँच प्रतिशत विद्यालयों के चित्र मुख्य विषय (Core) पर आधारित थे। लगभग बीस प्रतिशत विद्यालयों ने हिंदी भाषा की संस्कृति का चित्र ना लेकर विदेशी संस्कृति को चुना, जो एक ग़लत चुनाव है।

अधिकतम चित्र ऐसे थे जिनमें केवल एक ही व्यक्ति/दृश्य शामिल था और कुछ चित्र ऐसे भी थे जिनमें दो-चार चित्रों को इकट्ठा जोड़कर, खींच-तान कर जमाया गया था। चित्र का संयोजन ऐसा होना चाहिए कि जिसमें दो-चार चित्रों के बजाए एक ही चित्र हो और उस एक चित्र में भी अनेक

व्यक्ति/दृश्य/परिस्थितियाँ हों, जिनसे मानक स्तर के विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति के लिए अधिकतम आधार मिले।

लगभग दस प्रतिशत शीर्षक प्रश्न के रूप में बढ़िया तरीके संजोए गए थे जो कि मानक स्तर के परीक्षार्थियों के लिए विस्तारपूर्वक बोलने में सहायक साबित हुए। कुछ चित्रों के शीर्षक अंग्रेज़ी में भी पाए गए। हिंदी शीर्षकों में वर्तनी की अशुद्धियाँ भी देखने को मिलीं।

चित्र का उचित संयोजन और उसका सारगर्भित शीर्षक एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसे बहुत ही कम विद्यालयों के कुछ ही शिक्षकों ने संचालित किया। उदाहरण के तौर पर रीतिरिवाज और परम्परा के अंतर्गत विवाह विषय के चित्र को खूबसूरती से विवाह में वर-वधु दोनों पक्षों को खर्च निर्वाह करना चाहिए संबधित शीर्षक देकर एक विचारोत्तेजक प्रस्तुति को जन्म मिला, वहीं अधिकतम विद्यालयों ने योग/व्यायाम करते हुए, राखी बाँधने और बंधवाने वाले हाथ, धूम्रपान, डिब्बाबंद खानों के चित्र आदि केवल संक्षिप्त शीर्षकों के साथ दिए, जिनमें परीक्षार्थी मौलिक अभिव्यक्ति के बजाए विषय संबंधित जानकारी को रटे-रटाए तौर पर प्रस्तुत करते नज़र आए।

लगभग चालीस प्रतिशत चित्र बिना साभार के थे। चित्र संयोजन के समय, चित्र किस पत्र-पत्रिका, जगत-जाल के पन्ने आदि से लिया गया है (साभार) अवश्य शामिल करना चाहिए। आई. बी. के शैक्षणिक ईमानदारी के नियमानुसार यह यह एक उचित प्रक्रिया है।

अधिकतर विद्यालयों के परीक्षार्थियों ने अपनी मौखिक प्रस्तुती में अपना नाम, परीक्षार्थी क्रमांक, विद्यालय का नाम आदि नहीं बोला। परीक्षार्थियों के हित के लिए मूल्यांकन कार्य में गोपनीयता के तहत अब परीक्षार्थी मौखिक प्रस्तुती के पूर्व अपना नाम, परीक्षार्थी क्रमांक, विद्यालय का नाम आदि नहीं बोलेंगे और प्रपत्र 2B/IA की कार्यवाही को भी रद्द कर दिया गया है।

अधिकतर रिकार्डिंग की गुणवत्ता उत्तम दर्जे की रही। कुछ रिकार्डिंग ऐसी भी थीं जिनमें चहल-पहल, शोरशराबा मोबाईल की आवाज़ आदि भी सुनाई दीं। रिकार्डिंग एक शांत कमरें में होनी चाहिए और अपलोड करने से पहले तकनिकी खराबी की जाँच कर लें तो और भी बहतर।

प्रत्येक मूल्यांकन कसौटी के अनुरूप परीक्षार्थी का प्रदर्शन

प्रथम भाग : मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता

इस प्रथम चरण में अधिकतम परीक्षार्थियों ने समय सीमा का बखूबी पालन किया और चार मिनट के अंदर प्रस्तुति समाप्त की। कुछ परीक्षार्थी विषय से भटके भी प्रतीत हुए, जबकि अधिकतम परीक्षार्थियों की अपनी मौखिक प्रस्तुति चुने गए चित्र और उसी विषय पर आधारित रही। लगभग पचास प्रतिशत परीक्षार्थियों ने तेजतर्रार बोलने के चक्कर में न तो वाक्यों को उचित रूप से पूर्ण किया और न ही सटीक शब्दों का प्रयोग किया (ऐसे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जिनका सरल पर्याय हिंदी में मौजूद है)। अनेक परीक्षार्थियों का व्यक्तव्य रटा हुआ या कागज से पढ़ा गया प्रतीत हुआ। बहुत कम ऐसे परीक्षार्थी थे जिन्होंने अभिव्यक्ति के समुचित उतार-चढ़ाव सहित, माकन स्तर अनुसार शुद्ध भाषा और सटीक शब्दावलियों का प्रयोग किया। अधिकतर परीक्षार्थियों का शब्द भंडार सीमित प्रतीत हुआ तथा अशुद्ध भाषा या शब्दों का गलत प्रयोग किया गया। लिंग और वचन की अशुद्धियाँ भी रहीं। कुछ परीक्षार्थियों ने मुहावरों एवं लोकोक्तियों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया। इस सत्र की कुछ रिकार्डिंग केवल दो मिनट की मिली और कुछ आठ मिनट तक। इस पहले सत्र की समय सीमा तीन से चार मिनट की है। कुछ रिकार्डिंग में

International Baccalaureate Baccalauréat International Bachillerato Internacional

शिक्षक इस पहले सत्र में ही बोलते सुनाई पड़े जबकि यह सत्र केवल परीक्षार्थी की मौखिक प्रस्तुति का है।

द्वितीय भाग : अर्थ-ग्रहण एवं परिसंवाद की क्षमता

इस दूसरे चरण में अधिकतम परीक्षार्थी श्रोता को अपनी बात समझाने में सफल रहे। बहुत ही कम परीक्षार्थी ऐसे थे जिनके वार्तालाप में सहजता, गहराई, मौलिकता का भाव और समुचित सहभागिता का प्रदर्शन था । इस द्वितीय भाग के चर्चा सत्र के लगभग तीस प्रतिशत नमूनों में परीक्षकों का ही दबदबा रहा। उन्होंने विद्यार्थियों को बोलने के बहुत कम अवसर दिए और वे ही विस्तारपूर्वक बोलते रहे, परीक्षार्थी की बात को ही समझाते या दुहराते रहे जिससे परीक्षार्थियों को बोलने का अवसर कम मिला। तक़रीबन तीस प्रतिशत शिक्षकों ने अप्रासंगिक बिन्दुओं को चर्चा के लिए उठाया, जबकि चर्चा सत्र में परीक्षार्थी द्वारा चुने गए चित्र (और शीर्षक) सम्बंधित प्रश्नों का समावेश करना चाहिए। अचानक अप्रासंगिक प्रश्नों या विषय के तथ्यपरक प्रश्नों से परीक्षार्थी हतोत्साहित हो सकता है और उसकी मौखिक अभिव्यक्ति पर इसका असर पड़ सकता है। चर्चा के दौरान शिक्षक/शिक्षिका एवं परीक्षार्थी पाश्चात्य संस्कृति पर टिप्पणी करते सुनाई दिए। अधिकतम नमूनों में पुराने पाठ्यक्रम के अनुसार प्रश्नोत्तरी-सत्र ही पाया गया, जिसमे शिक्षक केवल प्रश्नकर्ता और विद्यार्थी सिर्फ उत्तरदाता की भूमिका में थे। सात प्रतिशत नमूनों में कुछ शिक्षक/शिक्षिकाओं ने पुराने पाठ्यक्रम की तर्ज़ पर (तीसरे सत्र की तरह) प्रश्न-उत्तर का सिलसिला जारी रखा जिसमें परीक्षार्थियों से व्यक्तिगत रूचि, भविष्य की योजनाएँ आदि सवाल पूछे गए, जबकि यह इस पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं है। बहुत कम, किन्तु कुछ शिक्षक/शिक्षिकाओं ने चर्चा सत्र को बहुत बढ़िया रूप से संचालित किया और परिणामस्वरूप परीक्षार्थियों के मौलिक एवं गहराई लिए हुए विचार सुनने को मिले। इस सत्र की कुछ रिकार्डिंग केवल तीन मिनट की मिली और कुछ ग्यारह मिनट तक। इस चर्चा सत्र की समय सीमा पाँच से छह मिनट की है।

भावी परीक्षार्थियों के शिक्षण हेतु परामर्श और मार्गदर्शन

अध्यापकों से अपेक्षा है कि सर्वप्रथम आई. बी. के हिंदी पाठ्यक्रम (द्वितीय भाषा) की निर्देश पुस्तिका को ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझें। चित्रों के संयोजन, शीर्षक, साभार आदि के बारे में पाठ्यक्रम की निर्देश पुस्तिका में दी गई कार्यप्रणाली का पालन करें। कक्षा में मौखिक प्रस्तुति का समुचित अभ्यास करवाएँ जिसमें उचित भाषा, सही उच्चारण, अभिव्यक्ति में उतार-चढ़ाव, सहजता आदि पहलुओं का समावेश तो हो ही, साथ-ही-साथ विद्यार्थी उसे रिकार्ड कर अपनी आवाज़ में सुन भी लें। शिक्षकों से अनुरोध हैं कि अपने शिक्षा सत्रों में और इन अभ्यासों में मूल्याङ्कन के मानदंडों को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें। अंक प्रणाली के खाँचे के प्रत्येक पहलुओं को अभ्यास एवं इकाई परीक्षाओं में शामिल करें। परीक्षार्थियों से सहज, सरल अभिव्यक्ति एवं मौलिक विचारों की प्रस्तुति अपेक्षित है, अत: रटकर बोलने की परम्परा के बजाए दो वर्षों वाले शैक्षिक सत्र में अभ्यास कराएँ। समय सीमा का प्रशिक्षण और अंग्रेजी शब्दों के बजाय उनके सरल हिंदी पर्याय के प्रयोग को पठन-पाठन का हिस्सा बनाएँ। विद्यार्थियों के शब्द भंडार को बढ़ाने में भी मदद की जानी चाहिए। चर्चा सत्र के दौरान शिक्षक के प्रश्न संक्षिप्त और सटीक हों और विद्यार्थी को बोलने का अधिक-से-अधिक अवसर दिया जाए।

International Baccalaureate
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

Higher level written assignment

Component grade boundaries

Grade:	1	2	3	4	5	6	7
Mark range:	0 - 4	5 - 8	9 - 12	13 - 15	16 - 17	18 - 20	21 - 24

प्रस्तुत कार्य का विस्तार और उपयुक्तता

प्रसन्नता की बात यह है कि पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष लिखित कार्य काफी सराहनीय रहा। लेखन कार्य में रचनात्मकता को नए दृष्टिकोण द्वारा दर्शाया गया। साहित्यिक कार्य के चयन में जहाँ सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी की रचनाओं की बहुलता दिखाई दी वहीँ कुछ परीक्षार्थियों ने नए लेखकों की समसामयिक रचनाओं को भी आधार बनाया। लेखन कार्य में परीक्षार्थियों ने दैनंदिनी, रिपोर्ट, कहानी का नया अंत, साक्षात्कार, ब्लॉग आदि विविध विधाओं में रचनात्मक कार्य लिखा वहीँ, कुछ परीक्षार्थियों द्वारा लेखन कार्य- निबंध, सार, प्रश्न और उत्तर के प्रारूप में लिखा गया था जो कि आई बी द्वारा अमान्य है। कुछ परीक्षार्थियों ने औचित्य के स्थान पर कहानी का केवल सार ही लिखा। (आई बी विषय मार्गदर्शिका को अवश्य पढ़ें।) कुछ परीक्षार्थियों ने साहित्यिक कहानी के चयन में १ या २ कहानी की जगह अधिक कहानियों को आधार बनाया जिससे लेखन कार्य को रचनात्मक बनाने में परीक्षार्थी भ्रमित प्रतीत हुए।

प्रत्येक मूल्यांकन कसौटी के अनुरूप परीक्षार्थी का प्रदर्शन

मापदंड ‘अ’ – औचित्य एवं कार्य

अधिकांश लिखित कार्य में औचित्य एवं कार्य के विवर्णकों की स्पष्टता दिखाई दी, जिससे परीक्षर्थियों को इस मापदंड में उत्तम अंक प्राप्त हुए। परीक्षार्थियों को मापदंड ‘अ’ के सभी विवर्णकों के अनुसार स्पष्ट एवं संरचित कार्य करने की आवश्यकता है।

औचित्य में कहानी का लघुसार, विधा, उद्देश्य, उद्देश्य की पूर्ति की जानकारी प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट होनी चाहिए। लेखक का विस्तृत परिचय अपेक्षित नहीं है| कुछ लेखन कार्यों में औचित्य एवं कार्य के मध्य असंगतता देखी गई तो कहीं शब्द संख्या का ध्यान नहीं रखा गया।

मापदंड ‘ब’ – संरचना एवं संवर्धन

लिखित कार्य में मापदंड ‘ब’ में अधिकांश परीक्षार्थियों का प्रदर्शन उत्तम था। विचारों का तार्किक एवं संगठित विकास किया गया। कुछ कार्यों में वैचारिक क्रमबद्धता और योजना का अभाव दिखाई दिया, जिसमें सुधार की आवश्यकता है। मापदंड के विवर्णकों के सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए योजना निर्धारित करें। लेखन कार्य में उद्देश्य पूर्ण रूप से परिलक्षित होना चाहिए।

International Baccalaureate
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

मापदंड 'स' – भाषा

लिखित कार्य में परीक्षार्थियों ने भाषा का प्रयोग सटीक, उचित और विधा के अनुरूप किया, किन्तु अधिकांश कार्यों में वर्तनी सम्बन्धी मूलभूत त्रुटियों की प्रधानता भी रही। परिष्कृत भाषा का प्रयोग अपेक्षित है। परीक्षार्थियों द्वारा भाषिक लेखन अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने हेतु सटीक मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग किया गया है, किन्तु कुछ कार्यों में असंगत एवं अनावश्यक रूप से मुहावरों, कहावतों के प्रयोग से भाषा सहजता बाधित हुई है। भाषा विधानुरूप व पात्रानुकूल होनी चाहिए।

भावी परीक्षार्थियों के शिक्षण हेतु परामर्श और मार्गदर्शन

शिक्षकों से निवेदन है कि लेखन कार्य शुरू करने से पहले परीक्षार्थियों को ध्यानपूर्वक आई बी द्वारा उल्लिखित विषय मार्गदर्शिका अवश्य पढ़वाएँ। लिखित कार्य के प्रत्येक चरण पर छात्रों का उचित मार्गदर्शन एवं प्रत्येक मापदंड के विवर्णकों से छात्रों को भलीभाँति अवगत करवाएँ। मापदंड 'अ' के विवर्णकों का समुचित पालन करने में अधिकांश परीक्षार्थी सफल हुए। परीक्षार्थियों को औचित्य लिखते समय मापदंड के विवर्णकों के सभी बिन्दुओं को स्पष्ट रूप से लिखना आवश्यक है, यथा - विधा, उद्देश्य, उद्देश्य की पूर्ति कैसे की जाएगी, साहित्यिक कार्य का उल्लेख एवं संक्षिप्त विवरण, लक्षित पाठक या श्रोता आदि। लिखित कार्य में विधा का चयन उद्देश्य के अनुरूप होना चाहिए। लेखन कार्य में परीक्षार्थी के कल्पनात्मक व रचनात्मक कौशल का परीक्षण किया जाता है, अत: शिक्षकों से निवेदन है कि वह लिखित कार्य में छात्रों को रचनात्मक कार्य लिखने हेतु प्रोत्साहित करें। लेखन कार्य में साहित्यिक कार्य के विषय वस्तु की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। अनावश्यक रूप कविता का भावार्थ या स्पष्टीकरण न लिखें ।

शिक्षक विद्यार्थियों को व्याकरणिक संरचना का अधिक अभ्यास करवाएँ, जिससे लिंग और वचन संबंधी त्रुटियों में सुधार हो सके।

चूँकि टंकित लिखित कार्य ही आई बी में स्वीकृत है, अतएव हस्तलिखित कार्य न जमा करें।

सभी शिक्षकों से अनुरोध है कि परीक्षार्थियों से विद्यालय या परीक्षार्थी का नाम अथवा अनुक्रमांक लिखित कार्य में कहीं भी न लिखवाएँ। लिखित कार्य में औचित्य, लेखन कार्य, एवं सन्दर्भ सूचि एक ही प्रलेख में रखें।

Standard level written assignment

Component grade boundaries

Grade:	1	2	3	4	5	6	7
Mark range:	0 - 3	4 - 7	8 - 11	12 - 14	15 - 17	18 - 20	21 - 24

International Baccalaureate Baccalauréat International Bachillerato Internacional

प्रस्तुत कार्य का विस्तार और उपयुक्तता

इस वर्ष लिखित कार्य हेतु विषय एवं विधाओं का चयन बेहतर रहा। औचित्य एवं लिखित कार्य में कुछ कार्यों को छोड़कर बाकी सभी कार्यों में निर्धारित शब्द संख्या का पालन किया गया, हालाँकि अधिकतर कार्यों में शब्द संख्या नहीं लिखी गई। साथ ही विस्तृत, विविध एवं उचित शब्दावलीयुक्त विधानुरूप सटीक एवं परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया गया। हालाँकि कुछ कार्यों में वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ पाई गईं। कुछ कार्यों में औचित्य के अंतर्गत सभी बिंदु पूर्णतः स्पष्ट वर्णित थे, किंतु अधिकतर कार्यो में अपूर्ण या अस्पष्ट थे। कुछ परीक्षार्थियों ने मूल विषयों से स्रोतों का चयन न करके वैकल्पिक विषयों विशेषकर स्वास्थ्य से स्रोतों का चयन किया। इस वर्ष भी कुछ कार्यों में स्रोतों के चयन में आई बी द्वारा निर्धारित ३ से ४ की संख्या का पालन नहीं किया। कुछ कार्यों में औचित्य एवं कार्य की भाषा में असंगतता देखी गई। औचित्य में भाषा अत्यंत त्रुटिपूर्ण और लिखित कार्य त्रुटिरहित था। अधिकतर कार्यो में मापदंडों के विवर्णकों का समुचित पालन नहीं किया गया। कुछ कार्यों में औचित्य लिखित कार्य के बाद लिखा गया एवं अधिकांश कार्यों में सन्दर्भ स्रोत सूची नहीं लिखी गई। इस वर्ष भी कुछ ही कार्यों को छोडकर लगभग सभी लिखित कार्यों में विद्यालय का नाम या क्रमांक, परीक्षार्थी का नाम या अनुक्रमांक या पर्यवेक्षक अध्यापक का नाम आदि लिखा पाया गया।

प्रत्येक मूल्यांकन कसौटी के अनुरूप परीक्षार्थी का प्रदर्शन

कुल मिलाकर अधिकतर परीक्षार्थियों का संतोषजनक प्रदर्शन एवं कुछ परीक्षार्थियों का अत्यंत प्रभावशाली प्रदर्शन।

मापदंड 'अ' – औचित्य एवं कार्य

इस मापदंड का समुचित पालन न करने के कारण अधिकतर परीक्षार्थियों को पूर्ण अंक नहीं मिल पाए। कुछ कार्यों में ही मापदंड 'अ' के सभी विवर्णकों का समुचित ध्यान रखा गया, किन्तु अधिकतर कार्यों में इनकी उपेक्षा की गई। विषय चयन के सन्दर्भ में अधिकांश परीक्षार्थी भ्रमित दिखे। लिखित कार्य हेतु मुख्य विषय (core topic) के अंतर्गत किसी विशेष बिंदु का चयन न करके मुख्य विषय को ही लिखित कार्य के लिए चुना गया या चयनित विषय का स्पष्ट उल्लेख न करके विषय के सन्दर्भ में अति विस्तृत भूमिका लिखी गई। कुछ लिखित कार्यों में एक या दो ही स्रोत का उल्लेख करके उसी को आधार बनाया गया। अधिकतर कार्यों में उद्देश्य और उसकी पूर्ति का स्पष्ट संकेत नहीं था, वहीं किन्हीं कार्यों में औचित्य में निहित उद्देश्य एवं लिखित कार्य के मध्य असंगतता भी देखी गई। इनका सम्भावित कारण परीक्षार्थियों के मध्य मापदंड की आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता की कमी या समझ का अभाव हो सकता है।

मापदंड 'ब' – संरचना एवं संवर्धन

इस वर्ष लिखित कार्य में मापदंड **'ब'** के अनुरूप अधिकांश परीक्षार्थियों का सामान्य रूप में प्रदर्शन उत्तम था, विचारों का तार्किक एवं संगठित विकास किया गया, हालाँकि कुछ परीक्षार्थियों के कार्यों में इनका अभाव होने के कारण वे मापदंड **'ब' में** पूर्ण अंक नहीं प्राप्त कर पाए। परीक्षार्थियों को इस मापदंड के विवर्णकों के सभी बिन्दुओं का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। यथा – उद्देश्य, उद्देश्य की पूर्ति एवं विषय पूरे लिखित कार्य में परिलक्षित हो।

मापदंड 'स' – भाषा

अधिकांश परीक्षार्थियों द्वारा विधा अनुरूप उचित, सटीक एवं उत्तम भाषा का प्रयोग किया गया, साथ ही विधा के प्रारूप एवं शैली का भी समुचित पालन किया गया, किन्तु कुछ कार्यों में इन बिंदुओं पर ध्यान

International Baccalaureate
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

नहीं दिया गया। अधिकांश कार्यों में असंगत एवं अनावश्यक रूप से मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग किया गया, वहीं कुछ कार्यों में उचित एवं सटीक मुहावरों एवं कहावतों से युक्त भाषा का प्रयोग किया गया। जहाँ एक ओर परीक्षार्थियों ने अच्छी भाषा का प्रयोग किया, वहीं अनेक कार्यों में कारक एवं वर्तनी सम्बन्धी मूलभूत त्रुटियों की अधिकता दिखाई दी।

भावी परीक्षार्थियों के शिक्षण हेतु परामर्श और मार्गदर्शन

सम्भवतः मापदंडों के विवर्णकों के प्रति जागरूकता की कमी एवं अनभिज्ञता के कारण अनेक परीक्षार्थी उत्तम अंक प्राप्त करने से वंचित रह गए। भविष्य में इस कमी को दूर करने के लिए परीक्षार्थियों को अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में आई बी द्वारा उल्लिखित आवश्यकताओं का पालन करना चाहिए; यथा – ३-४ स्रोतों को लिखित कार्य के लिए आधार बनाना, स्रोत एवं विषय को वैकल्पिक विषयों की अपेक्षा मूल विषय के अंतर्गत ही चयन करना। औचित्य १५०-२०० एवं लिखित कार्य ३००-४०० शब्द सीमा के अंदर लिखना आदि। (शब्द सीमा में कारक सहित सभी शब्द गिने जाएँगे।)

मापदंड 'अ' में उत्तम अंक प्राप्त करने हेतु परीक्षार्थियों को औचित्य लिखते समय मापदंड के विवर्णकों के सभी बिन्दुओं को स्पष्ट रूप से लिखना आवश्यक है, यथा - विषय, उद्देश्य, उद्देश्य की पूर्ति कैसे पूरी होगी, स्रोतों का शीर्षक सहित स्पष्ट उल्लेख एवं उनका विवरण, लिखित कार्य के लिए विषय एवं उद्देश्य के अनुसार विधा का चयन एवं उसका पाठक या श्रोता कौन है आदि। साथ ही परीक्षार्थियों को मापदंड 'अ' के सभी विवर्णकों के अनुसार संरचित एवं स्पष्ट कथन में कार्य करने की आवश्यकता है। विषयवस्तु में विविधता लाने हेतु अलग-अलग विधाओं के तीन से चार स्रोतों को आधार बनाकर लिखित कार्य करना परीक्षार्थियों के लिए लाभदायक होगा।

लिखित कार्य के प्रत्येक चरण पर छात्रों का उचित मार्गदर्शन एवं प्रत्येक मापदंड के विवर्णकों से छात्रों को भलीभाँति परिचित कराना शिक्षकों से अपेक्षित है। शिक्षक कक्षा में विषय चयन को लेकर विशेष चर्चा करें तथा यह सुनिश्चित करें कि छात्र विषय चयन के मूल भाव को समझें और मुख्य विषय (Core topics) में से ही अपना विषय चुनें। औचित्य के बिन्दु स्पष्ट होने पर विद्यार्थी को लिखित कार्य करने में स्पष्ट दिशा मिलती है, इसलिए औचित्य लेखन का विशेष अभ्यास करवाना उचित होगा। उसमें अपेक्षित सभी तत्वों पर कक्षा में सामूहिक चर्चा करना विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद हो सकता है।

संगत एवं आवश्यकतानुसार मुहावरों एवं कहावतों का उचित प्रयोग सिखाने हेतु एवं भाषा में हो रही मूलभूत त्रुटियों को दूर कराने के लिए कक्षा में विभिन्न गतिविधियों द्वारा निरंतर अभ्यास करवाना भावी परीक्षार्थियों के लिए लाभदायक होगा।

परीक्षार्थियों को अपने लिखित कार्य में सर्वप्रथम औचित्य लिखना चाहिए, तत्पश्चात लेखन कार्य एवं सन्दर्भ स्रोत सूची। ये सभी एक ही प्रलेख में होने चाहिए। उस प्रलेख में विषय सूची एवं लिखित कार्य के लिए आधार बनाए गए स्रोतों को अनावश्यक रूप से न संलग्न किया जाए। औचित्य में स्रोतों का समुचित उल्लेख एवं उनका स्पष्ट विवरण देना एवं सन्दर्भ स्रोत सूची के अंतर्गत दी गई स्रोतों की जानकारी पर्याप्त है।

शिक्षकों से विनम्र निवेदन है कि मूल्यांकन हेतु भेजने से पूर्व भलीभांति जाँच लें कि परीक्षार्थी द्वारा लिखित कार्य में विद्यालय का नाम या क्रमांक, परीक्षार्थी का नाम अथवा अनुक्रमांक (किसी भी प्रकार का अनुक्रमांक), अध्यापक का नाम आदि कहीं भी न लिखा गया हो।

Higher level paper one

Component grade boundaries

Grade:	1	2	3	4	5	6	7
Mark range:	0 - 13	14 - 27	28 - 37	38 - 43	44 - 49	50 - 55	56 - 60

परीक्षार्थियों के लिए पाठ्यक्रम और परीक्षा के कठिन प्रतीत होने वाले संभाग

हिन्दी बी उच्च स्तर प्रश्न पत्र 1 के पाठ्यक्रम में परीक्षार्थियों के लिए सर्वाधिक कठिन संभाग 'दिए गए शब्दों के उचित अर्थ को ढूँढना' तथा 'वाक्यांश के लिए पाठांश से एक शब्द ढूँढना' रहा।

पाठ्यक्रम और परीक्षा के वे संभाग जिनके लिए परीक्षार्थी पूर्णतः तैयार लगे

अधिकांश परीक्षार्थी पाठ्यक्रम के 'वाक्यांश का सही अनुच्छेद से मिलान करना', 'दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखना' तथा 'दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करना' जैसे प्रश्नों के सही उत्तर लिखने में सफल रहे और इनके लिए वे तैयार लगे।

प्रश्न विशेष का विवेचन करते समय परीक्षार्थियों की खूबियाँ और कमियाँ

प्रश्न 1-12: 'पाठांश के अनुच्छेदों को दाईं ओर लिखे उचित प्रश्नों से मिलान' करना, 'रिक्त स्थानों की पूर्ति करना' तथा 'प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर' लिखना - इन सभी संभागों के प्रश्नों के उत्तर लिखने में परीक्षार्थी सफल रहे| यद्यपि कई परीक्षार्थी प्रश्न संख्या 10 का सही उत्तर लिखने में असफल रहे|

अधिकांश परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न 13-17 वाला भाग (दिए गए शब्दों के करीबी अर्थ चुनना) कठिन प्रतीत हुआ। बहुत ही कम परीक्षार्थी इस संभाग में सभी प्रश्नों के सही उत्तर लिखने में सफल रहे|

प्रश्न 18-22: 'पाठांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखना'- इस संभाग में बहुत से परीक्षार्थियों ने अच्छे अंक प्राप्त किए|

प्रश्न 23: 'पाठांश के आधार पर सही वाक्यों का चयन करना'- इस संभाग में भी परीक्षार्थियों ने अधिकाधिक अंक बटोरे|

प्रश्न 24-32: 'वाक्यांशों में रेखांकित शब्द जिसके लिए प्रयोग किये गए' तथा 'प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर' सामान्यत: सभी परीक्षार्थियों ने सही लिखे।

International Baccalaureate® Baccalauréat International Bachillerato Internacional

प्रश्न 33-36: सही या गलत (औचित्य के साथ) - अधिकतर परीक्षार्थियों ने वाक्य के सही या गलत होने को परखा परन्तु कुछ परीक्षार्थी मुख्य शब्द का अर्थ भली-भाँति न समझ पाने के कारण सही औचित्य लिख पाने में असमर्थ रहे।

प्रश्न 37: बहु विकल्पी प्रश्न – लगभग सभी परीक्षार्थियों को यह संभाग सर्वाधिक आसान प्रतीत हुआ।

पर्याप्त शब्द कोश के ज्ञान के अभाव में कुछ परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न 38-42 चुनौती भरे प्रतीत हुए|

प्रश्न संख्या 43-48 तक 'बहु विकल्पी प्रश्नों के उत्तर' लगभग सभी परीक्षार्थियों ने सही लिखे|

कुछ परीक्षार्थियों को प्रश्न 49-55 तक (सही वाक्यांशों का चयन कर वाक्य पूरे करना) पर्याप्त शब्दों की जानकारी के अभाव में कठिन प्रतीत हुए|

भावी परीक्षार्थियों के शिक्षण हेतु परामर्श और मार्गदर्शन

परीक्षार्थियों को पाठ्यक्रम के प्रारम्भ से ही इस बात का ध्यान रखने के लिए प्रेरित करना चाहिए कि वे जब भी प्रश्न पत्र से कोई भी शब्द, वाक्यांश या वाक्य उतारकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखते हैं, तो वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ करने से बचें|

परीक्षार्थियों को शिक्षण के दौरान यह ज्ञात करवाना आवश्यक है कि वाक्य के सही या गलत होने पर सीमित शब्दों में औचित्य किस प्रकार लिखा जाए| इस प्रकार परीक्षार्थी जस के तस लम्बे वाक्य या अनुच्छेद उतारने से बच पाएँगे|

लिखावट पर ध्यान देना भी आवश्यक है। कभी-कभी वर्णों के अस्पष्ट होने के कारण यह सुनिश्चित करना कठिन हो जाता है कि कौन सा वर्ण विशेष लिखा गया है। उदाहरण स्वरूप- 'घ' और 'छ '|

परीक्षार्थियों को नित्यप्रति हिंदी पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए जिससे उनका शब्द कोश दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले हिंदी शब्दों तक ही सीमित न रहे|

Standard level paper one

Component grade boundaries

Grade:	1	2	3	4	5	6	7
Mark range:	0 - 6	7 - 12	13 - 16	17 - 23	24 - 31	32 - 38	39 - 45

परीक्षार्थियों के लिए पाठ्यक्रम और परीक्षा के कठिन प्रतीत होने वाले संभाग

पाठांश घ 'नुक्कड़ नाटक की वर्तमान स्थिति और भविष्य पर डॉ प्रज्ञा से साक्षात्कार' में विशेषकर प्रश्न ३२-३३ 'अनुच्छेद से प्रश्न मिलाना', प्रश्न ३४ 'प्रश्न–उत्तर' तथा ३८ से ४१ 'सही वाक्यांश चुनकर वाक्य

पूरा करने' में अधिकांश विद्यार्थियों को कठिनाई का सामना करना पड़ा। **पाठांश ख 'पत्रों का जादू'** के 'बहुविकल्प' प्रश्न १७ और १९, के सही विकल्प चुनने में अधिकतर छात्रों ने गलती की।

पाठांश ग 'समझदारी से दूर करें रिश्तों के बीच गलतफहमी और दूरियाँ' प्रश्न संख्या २१ 'अनुच्छेद से सारांश मिलाने' एवं प्रश्न संख्या ३१ 'करीबी अर्थ' ढूँढने में छात्र असमर्थ रहे।

पाठ्यक्रम और परीक्षा के वे संभाग जिनके लिए परीक्षार्थी पूर्णतः तैयार लगे

पाठांश क 'घर बैठे चला रहे हैं अपना चैनल' के अधिकतर प्रश्न छात्रों द्वारा सरलता से हल कर लिए गए।

पाठांश ख 'पत्रों का जादू' के प्रश्न ९–१२ प्रश्नोत्तर एवं प्रश्न १५ का 'शब्द' आसानी से ढूँढ पाए। यह पाठांश छात्रों को अधिक सरलता से समझ में आया।

पाठांश ग 'समझदारी से दूर करें रिश्तों के बीच गलतफहमी और दूरियाँ' में औचित्य प्रश्न २३–२७ में दिए गए सन्दर्भ की त्रुटि होने के बावजूद भी अधिकांश विद्यार्थियों को हल करने में कठिनाई नहीं हुई। अन्य प्रश्नों २२, २८ एवं ३० को भी आसानी से हल कर लिया गया।

पाठांश घ 'नुक्कड़ नाटक की वर्तमान स्थिति और भविष्य पर डॉ प्रज्ञा से साक्षात्कार' के प्रश्न संख्या ३६-३७ अधिकांश विद्यार्थियों को सरल लगा।

पाठ्यक्रम और परीक्षा के वे संभाग जिनके लिए परीक्षार्थी पूर्णतः तैयार लगे

प्रश्न १ से ४ में कुछ छात्रों को छोड़कर अधिकतर छात्रों ने पूरे अंक प्राप्त किए। प्रश्न ५ में पाँच अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत बहुत ही कम था। करीब २२% विद्यार्थी ही ५ अंक प्राप्त कर सके।
प्रश्न६ ६ से ८ में अधिकतर छात्र उपयुक्त शब्द खोजने में सक्षम रहे।
प्रश्न १३ से १६ में कई छात्रों को उपयुक्त शब्द खोजने में कठिनाई का सामना करना पड़ा।
प्रश्न १९ में अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत बहुत ही कम था।
प्रश्न २१ का उत्तर अधिकतर छात्र सही नहीं लिख सके।
प्रश्न ३१ के उत्तर का सही शब्द खोजने में छात्र असमंजस की स्थिति में प्रतीत हुए।
प्रश्न ३७ से ४१ में व्याकरणिक अशुद्धियों के कारण उत्तर की पंक्ति लिखने के उपरांत भी कई छात्र अंक प्राप्त करने से वंचित रहे। कुल २५–३०% छात्र ही अंक प्राप्त कर सकने में सफल रहे।

प्रश्न विशेष का विवेचन करते समय परीक्षार्थियों की खूबियाँ और कमियाँ

१. विद्यार्थियों को सबसे प्रमुख बात यह बताना आवश्यक है कि उत्तर निर्धारित स्थान पर ही (बक्से के भीतर) स्पष्ट अक्षर या वर्तनी में लिखें तथा दो प्रश्नों के उत्तर गलत होने पर 'ऐरो' का चिह्न लगाकर न

इंगित करें बल्कि अलग शीट लेकर उस पर लिखें क्योंकि उत्तर पुस्तिका के स्कैन किए जाने पर निर्धारित हिस्सा ही देखने योग्य होता है।

१.

२. सही और गलत और औचित्य वाले प्रश्न में दोनों उत्तर लिखें होने पर ही अंक प्राप्त होगा। (सही/गलत का निशान तथा औचित्य) औचित्य में पाठांश की वे पंक्तियाँ ही लिखें जिनमें उत्तर निहित है। कई छात्र अपने शब्दों में औचित्य लिखते हैं, जो कि उचित नहीं है।

३. विद्यार्थियों को इस बात के लिए भी शिक्षित किया जाए कि प्रश्न में जो बात पूछी गयी है उतना ही सटीक उत्तर दें- एक शब्द, वाक्यांश, अधिक से अधिक एक वाक्य। अनावश्यक बातें लिखने पर प्राप्त होने वाले अंक भी नहीं मिल पाते।

२.

४. पाठांश से सही शब्दावली या वाक्यांश ही उतारने का प्रयास करें। शाब्दिक या व्याकरणिक गलतियों से बचें।

भावी परीक्षार्थियों के शिक्षण हेतु परामर्श और मार्गदर्शन

४० से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत कम रहा।

Higher level paper two

Component grade boundaries

Grade:	1	2	3	4	5	6	7
Mark range:	0 - 9	10 - 19	20 - 23	24 - 26	27 - 30	31 - 33	34 - 45

परीक्षार्थियों के लिए पाठ्यक्रम और परीक्षा के कठिन प्रतीत होने वाले संभाग

वर्ष 2017 की परीक्षा में प्रश्न 4 परीक्षार्थियों को कठिन प्रतीत हुआ। प्रश्न मनोरंजन के विषय से संबंधित था। प्रश्न था कि आपको हिंदी प्रदेश में रहने के लिए छह महीने की छात्रवृत्ति मिली है। इन अनुभवों को आगामी वर्ष के छात्रों के साथ अपने अनुभव बाँटने थे। प्रश्न चुनौतीपूर्ण था क्योंकि हिंदी प्रदेश की अवधारणा बहुत स्पष्ट नहीं थी। हिंदी प्रदेश के भीतर कई प्रदेश शामिल हैं और उनके आधार पर अनुभव देना परीक्षार्थियों के लिए असहज अभ्यास रहा। संयोग से यह प्रश्न बहुत कम परीक्षार्थियों ने ही किया। लेकिन जिन परीक्षार्थियों ने यह प्रश्न चुना वे अपने उत्तर लिखने में विषय के साथ न्याय नहीं कर पाए। अधिकांश परीक्षार्थी माध्यमिक व उच्च शिक्षा के पक्ष को जोड़ने में असफल रहे। परिणामस्वरूप ये सभी उत्तर संदेश के स्तर पर आंशिक रूप में ही जवाब दे पाए।

International Baccalaureate® Baccalauréat International Bachillerato Internacional

पाठ्यक्रम और परीक्षा के वे संभाग जिनके लिए परीक्षार्थी पूर्णतः तैयार लगे

अधिकांश परीक्षार्थियों ने प्रश्न 3 लिखा जो स्वास्थ्य के विषय पर केन्द्रित था। इस प्रश्न के अनुसार परीक्षार्थियों को कम्प्यूटर के अत्याधिक उपयोग से पैदा होने वाले स्वास्थ्य संबंधी पहलूओं पर विचार जोड़ने थे। यद्यपि अधिकांश छात्रों ने प्रारूप का ध्यान रखा और उनके लेखन में कई विशेषताओं को उजागर किया गया। साथ ही परीक्षार्थियों ने विस्तार से स्वास्थ्य संबंधी पक्षों की जानकारी दी। इसके लिए खाने-पीने की आदतों में परिवर्तन को भी बारिकी से उभारा। स्वास्थ्य संबंधी पहलूओं को उभारने के लिए कई सटीक उदाहरणों का भी प्रयोग किया गया।

प्रश्न विशेष का विवेचन करते समय परीक्षार्थियों की खूबियाँ और कमियाँ

मेहनती एवं मेधावी छात्रों के समक्ष बेहतर उत्तर लिखना कठिनाई नहीं बना। प्रश्न के अनुसार उत्तर नहीं आरंभ करना अधिकांश परीक्षार्थियों की प्रधान समस्या है। साथ में प्रश्न के अर्थों को पूरी तरह से समझने का प्रयास नहीं करना भी इस समस्या की अन्य बड़ी कमज़ोरी है। अधिकांश परीक्षार्थियों ने आंशिक रूप में ही प्रश्न समझा जिसका नतीजा था कि उनके उत्तर भी आंशिक ही रहे। इस पहलू पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है।

दूसरा अहम पक्ष है कि अपनी व्याख्या को लिखते समय कैसे तर्क का विस्तार करें यह लेखन में नज़र नहीं आता। तर्क को मज़बूती देने के लिए उदाहरण और वक्तव्यों को कैसे प्रयोग किया जाए, ये क्षमताएं भी बहुत कम देखने को मिलती हैं।

तीसरा, पक्ष भाषा प्रयोग से जुड़ा है। लगातार परीक्षार्थियों के लेखन पर अंग्रेज़ी की छाप गहरी होती जा रही है। अभिव्यक्ति हिंदी भाषा में ही हो, इसका विशेष ध्यान दिखाई नहीं पड़ता। उदाहरण के लिए यदि परीक्षार्थी लिखते हैं कि मैं सोचता हूँ तो यह महज़ "I think" का ही अनुवाद है। जबकि इसी बात को हिंदी में लिखने के लिए हम लिखेंगे 'मेरे ख्याल से' 'मुझको लगता है' इत्यादि।

भावी परीक्षार्थियों के शिक्षण हेतु परामर्श और मार्गदर्शन

यह अनिवार्य है कि भविष्य में अध्यापन के दौरान परीक्षार्थियों को अधिक से अधिक लिखने के अभ्यास करवाएं जाएं ताकि वर्तनी की ग़लतियों को सुधारा जा सके। सभी विद्यार्थियों को हिंदी में लिखने का अभ्यास इस हद तक करवाया जाए कि वह हिंदी में सोचकर वाक्य लिख सकें। जब तक परीक्षार्थी हिंदी में सोचने और लिखने के अभ्यस्त नहीं होंगे तब तक उनकी अभिव्यक्ति पर अंग्रेज़ी का प्रभाव समाप्त नहीं होगा। क्योंकि अधिकांश वाक्य जिन पर अंग्रेज़ी वाक्यों की छाया नज़र आती है ऐसे बहुतायात वाक्य पढ़ने में महज़ मन नीरस ही नहीं होता बल्कि विषय वस्तु की वास्तविकता से भी कट जाते हैं।

प्रश्न को समझकर अर्थात उसके विविध पहलूओं को जानने के बाद ही उत्तर लिखने की तैयारी करें। पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी वर्तनी की अनेकों अशुद्धियों ने लेखन समझने में बाधा पहुँचाई। इस वर्ष कई परीक्षार्थियों ने वर्तनी और व्याकरण संबंधी अनेकों ग़लतियां कीं। वर्तनी संबंधी ग़लतियों को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है। प्रथम, छोटी और बड़ी 'ईकार' का अनुचित प्रयोग। दूसरा, व्यंजन वर्ण जिनमें 'ह' की आवाज़ होती है उन्हें बिना 'ह' की आवाज़ के लिखा जैसेकि 'कभी कभार' को 'कबी कबार' लिखा गया। तीसरा, वर्ण 'र' के संयुक्ताक्षर लिखने की विधि भी अस्पष्ट नज़र आई। ये तीनों ही प्रकार की ग़लतियां बड़ी संख्या में दिखाई दीं। यह दर्शाता है कि परीक्षार्थी इन शब्दों के अर्थ और प्रयोगों से परिचित हैं लेकिन लिखने के अभ्यास की कमी के कारण लिखने में ग़लतियाँ करते हैं। अध्यापक और अध्यापिकाओं से पुनः अनुरोध करते हैं कि वे इन ग़लतियों की तरफ विशेष ध्यान दें और ज़्यादा से ज़्यादा लेखन अभ्यास करवाएं।

International Baccalaureate Baccalauréat International Bachillerato Internacional

Standard level paper two

Component grade boundaries

Grade:	1	2	3	4	5	6	7
Mark range:	0 - 4	5 - 9	10 - 11	12 - 15	16 - 18	19 - 21	22 - 25

परीक्षार्थियों के लिए पाठ्यक्रम और परीक्षा के कठिन प्रतीत होने वाले संभाग

पिछले वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष परीक्षार्थियों द्वारा चयन किये गए प्रश्नों में संतुलन रहा | यदि विधा की बात करें तो परीक्षार्थियों ने भाषण और वाद-विवाद के बीच के अंतर को समझने में थोड़ी भूल की है| यही कारण रहा कि किसी एक पक्ष पर विचार अभिव्यक्त करने की अपेक्षा दोनों पक्षों पर समान रूप से लिख दिया| कुछ परीक्षार्थियों ने उत्तर को आवश्यकता से अधिक विस्तार दे दिया जिसके फलस्वरूप मूल विषय से भटक गए और अनावश्यक तथा असंगत बिन्दुओं ने सन्देश को प्रभावित किया | वैकल्पिक विषय से सम्बंधित शब्दावली के विकास की ओर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है | विज्ञान और प्रौद्योगिकी विषय पर लिखते समय अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग की बहुलता रही | बेहतर उत्तर के लिए प्रश्न के सन्दर्भ को समझने की भी बहुत आवश्यकता है |

पाठ्यक्रम और परीक्षा के वे संभाग जिनके लिए परीक्षार्थी पूर्णतः तैयार लगे

अधिकांश परीक्षार्थियों ने समुचित भाषा तथा विषयानुकूल शब्दावली का प्रयोग किया है | स्वास्थ्य विषय पर परीक्षार्थियों की तैयारी अपेक्षाकृत अधिक रही | न्यूनतम शब्द संख्या का पालन सभी परीक्षार्थियों ने किया | पिछले वर्षों की तुलना में परीक्षार्थी प्रश्न पत्र में शामिल सभी विधाओं की विशिष्टताओं को समुचित रूप से स्पष्ट कर पाने में काफी हद तक सफल रहे | यही कारण है कि परीक्षार्थियों ने इस वर्ष प्रारूप में बहुत कम अंक गंवाएं|

प्रश्न विशेष का विवेचन करते समय परीक्षार्थियों की खूबियाँ और कमियाँ

प्रश्न १- इस प्रश्न का चुनाव करने वाले अधिकाँश परीक्षार्थियों ने भाषण और वाद-विवाद के अंतर को समझने में भूल की है | किसी देश की संस्कृति को जानने के लिए उस देश की भाषा को सीखना आवश्यक है, इस पर सहमति अथवा असहमति जताते हुए उत्तर अपेक्षित था | प्रश्न में स्पष्ट रूप से विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में विचार व्यक्त करने के लिए कहा गया था किन्तु अधिकांश ने दोनों पहलूओं पर रौशनी डाली है | हालाँकि दिए गए तर्कों को समुचित उदाहरणों के द्वारा पुष्ट किया गया था किन्तु दोनों पहलूओं पर उत्तर अपेक्षित नहीं था |साथ ही जिस सन्दर्भ में वाद- विवाद लिखना था उसका भी ध्यान नहीं रखा गया | प्रश्न के अनुसार विद्यालय में होने वाली वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए अपने विचार लिखने थे अतः संबोधन उसके अनुसार होना चाहिए था, किन्तु इस बात का बहुत से परीक्षार्थियों ने ध्यान नहीं रखा|

प्रश्न २- इस प्रश्न का चुनाव भी बहुत से परीक्षार्थियों ने किया | संभवतः औपचारिक पत्र के प्रारूप को लेकर परीक्षार्थी सहज थे और लगभग सभी ने इसके प्रारूप में पूरे अंक पाए | कुछ परीक्षार्थियों में सन्देश को लेकर थोड़ी भ्रम की स्थिति रही और वे प्रश्न के अनुरूप अपनी प्रतिक्रिया नहीं लिख पाए क्योंकि पहले पढ़े गए लेख का हवाला नहीं दिया | कुछ उत्तरों में तर्कों को पुष्ट करने के लिए समुचित उदाहरणों का

International Baccalaureate Baccalauréat International Bachillerato Internacional

अभाव भी दिखा | उत्तर में विशेष अवसरों के रूप में अनेक त्योहारों के वर्णन की अपेक्षा उन्हें मनाने के तरीकों की गहनता से चर्चा तथा तुलना की जानी चाहिए थी|

प्रश्न ३- अधिकांश परीक्षार्थियों ने इस प्रश्न का चयन किया इसका कारण संभवतः स्वास्थ्य विषय है| विधा भी लेख है जिसके प्रति अधिकांश परीक्षार्थी काफी सहज दिखे| स्वास्थ्य विषय से सम्बंधित विस्तृत शब्दावली का प्रयोग दिखा| इस प्रश्न में स्वास्थ्य से सम्बंधित एक ऐसी समस्या को चुना गया था जिससे अधिकांश परीक्षार्थी स्वयं को जोड़कर देख सकते थे | प्रायः इस उम्र के युवा अप्राकृतिक तरीकों से उर्जा बढ़ने का प्रयास करते हैं | यही कारण रहा कि चीनी वाले पेय पदार्थों से होने वाली हानियों का विस्तृत वर्णन किया तथा विकल्प के तौर पर अनेक उपाय भी सुझाए | कुछ परीक्षार्थी उत्तर में अपेक्षित दोनों पहलुओं में संतुलन बनाकर नहीं रख सके | किसी ने हानियों का विस्तार से वर्णन कर दिया और किसी ने उर्जा बढ़ाने के अन्य विकल्पों को विस्तार से लिख दिया |

प्रश्न ४- इस प्रश्न का चुनाव काफी संख्या में हुआ | ईमेल के प्रारूप की अनौपचारिक शैली के प्रति परीक्षार्थी काफी सहज लगे| यही कारण है कि सन्देश और प्रारूप में परीक्षार्थियों ने बहुत कम अंक गँवाए| अधिकांश परीक्षार्थियों ने मित्र की शिकायत का हवाला देते हुए काफी यर्थाथपूर्ण सुझाव दिए हैं | कुछ उत्तर केवल नानी- दादी के घर छुट्टियाँ बिताने तक सीमित रह गए |

प्रश्न ५- यह प्रश्न परीक्षार्थियों के बीच काफी लोकप्रिय रहा| प्रश्न ३ की भांति इस प्रश्न में दी गई स्थिति से परीक्षार्थी स्वयं को जोड़ पाए जिसके फलस्वरूप निजी उदाहरणों के द्वारा उत्तर को विश्वसनीय बना सके | जहाँ तक भाषा का सवाल है तो अंग्रेजी शब्दों की प्रधानता रही| संभवतः परीक्षार्थियों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी से सम्बंधित हिंदी भाषा के शब्दों के ज्ञान का अभाव रहा | ब्लॉग के प्रारूप में सभी परीक्षार्थियों ने लगभग पूरे अंक पाए |

भावी परीक्षार्थियों के शिक्षण हेतु परामर्श और मार्गदर्शन

- शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन मापदंड का समुचित स्पष्टीकरण अपेक्षित है| मापदंड के विवर्णकों के सभी बिन्दुओं का ज्ञान होने पर परीक्षार्थी प्रश्न की बारीकियों को स्पष्ट करने में सक्षम होंगें |
- प्रश्न के सभी पहलूओं पर सामान रूप से प्रकाश डालने के लिए परीक्षार्थियों को प्रश्न के मुख्य शब्दों को रेखांकित करके प्रश्न को विभाजित करने के लिए प्रोत्साहित करें| इससे प्रश्न का कोई पहलू उपेक्षित नहीं रहेगा |
- शिक्षकों से निवेदन है कि वे परीक्षार्थियों को वैकल्पिक विषयों से सम्बंधित शब्दावली का खूब अभ्यास करवाएं |
- भाषा गाइड में उल्लिखित सभी विधाओं का समान रूप से अभ्यास करवाएं | इसके लिए विभिन्न विधाओं के गद्यांश पढ़ने के लिए दिए जा सकते हैं | विधानुरूप भाषा और शैली के प्रयोग का अभ्यास करवाएं|
- जैसा कि पहले भी अनेक बार इस पर जोर दिया गया है, विद्यार्थियों को हिंदी भाषा में सोचने के लिए प्रोत्साहित करें, जिससे वे भाषा की सहजता को बनाए रख सकें | कभी- कभी परीक्षार्थी अंग्रेजी का ज्यों का त्यों अनुवाद लिख देते हैं |
- शिक्षकों से निवेदन हैं कि वे विद्यार्थियों को हिंदी भाषा की व्याकरणिक संरचना से बखूबी परिचित करवाएं |अनावश्यक रूप से असंगत मुहावरों के प्रयोग से परहेज़ की सलाह दें ताकि भाषा की सहजता को बनाए रखा जा सके |
- न्यूनतम शब्द सीमा का पालन सभी परीक्षार्थियों ने किया किन्तु कुछ परीक्षार्थियों ने अनावश्यक रूप से बहुत लम्बे उत्तर लिखे| उन्हें समझाया जाना चाहिए कि अनावश्यक रूप से लम्बे उत्तर लिखने से उनका मूल भाव प्रभावित हो जाता है |